

## भवषिय का संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन और संयुक्त राष्ट्र संस्थाओं में सुधार

### प्रलिस के लिये:

[संयुक्त राष्ट्र महासचिव](#), [सुटॉकहोम+50 सम्मेलन](#), [उच्च सागर संधि](#), [सतत विकास लक्ष्य](#), [पेरिस समझौता](#), [जीवाश्म ईंधन](#), [कृत्रिम बुद्धिमत्ता](#), [द्वितीय विश्व युद्ध](#), [अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष](#),

### मेन्स के लिये:

संयुक्त राष्ट्र सुधार की आवश्यकता, संयुक्त राष्ट्र सुधार और भारत, अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका

**स्रोत:** डाउन टू अर्थ

### चर्चा में क्यों?

संयुक्त राष्ट्र (UN) महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने हाल ही में भवषिय का संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन, 2024 को संबोधित किया और वैश्विक शांति, सुरक्षा और वृत्ति से संबंधित पुरानी संयुक्त राष्ट्र संस्थाओं में तत्काल सुधार का आह्वान किया। भारत के प्रधानमंत्री ने भी शिखर सम्मेलन में भाग लिया।

### भवषिय का संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन की मुख्य बातें क्या हैं?

- संयुक्त राष्ट्र के भवषिय का संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय शासन में सुधार और उसे मजबूत बनाना है। शिखर सम्मेलन का उद्देश्य समकालीन वैश्विक चुनौतियों का समाधान करना और आने वाली पीढ़ियों के लिये एक स्थायी भवषिय सुनिश्चित करना है।
- यह शिखर सम्मेलन 2022 संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सुटॉकहोम+50 सम्मेलन और उच्च सागर संधि जैसे संयुक्त राष्ट्र के हालिया पर्यासों पर आधारित है।
  - शिखर सम्मेलन का वषिय है 'बेहतर कल के लिये बहुपक्षीय समाधान'।
  - शिखर सम्मेलन का समापन एक परणाम दस्तावेज - भवषिय के लिये एक समझौता, तथा दो अनुलग्नों, ग्लोबल डिजिटल कॉम्पैक्ट और भावी पीढ़ियों पर एक घोषणा को अपनाने के साथ हुआ।
- भवषिय के लिये समझौता : इसका उद्देश्य सतत विकास लक्ष्यों (SDG) और जलवायु कार्रवाई के लिये पेरिस समझौते के लक्ष्यों में तेजी लाना है। इसमें जीवाश्म ईंधन से संक्रमण और एक स्थायी और शांतपूरण भवषिय सुनिश्चित करने की प्रतबिद्धता शामिल है।
  - ग्लोबल डिजिटल कॉम्पैक्ट प्रौद्योगिकी तक समान पहुँच को बढ़ावा देता है तथा यह सुनिश्चित करता है कि इसका लाभ सभी को मल सके।
  - संयुक्त राष्ट्र के भीतर एआई पर एक बहु-वषियक स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक पैनल के नरिमाण पर बल दिया, जिससे प्रभाव, जोखिम और अवसरो के साक्ष्य-आधारित आकलन के माध्यम से वैज्ञानिक समझ को आगे बढ़ाने के लिये संतुलित भौगोलिक प्रतनिधित्व सुनिश्चित हो सके और वर्तमान पहलों और अनुसंधान नेटवर्क का उपयोग किया जा सके। इसके परणामस्वरूप कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) (एसडीजी 17) के शासन पर पहला सार्वभौमिक समझौता शुरू हुआ।
  - दीर्घकालिक वचिर को बढ़ावा देने के लिये "भवषिय की पीढ़ियों पर घोषणा (Declaration on Future Generations)" वर्तमान नरिणय नरिमाताओं से भवषिय की पीढ़ियों के हतियों को ध्यान में रखने का आह्वान करती है।
    - यह परमाणु नरिसुत्रीकरण, स्वायत्त हथियारों को वनियमित करने तथा बाह्य अंतरिक्ष में हथियारों की होड़ को रोकने के लिये प्रतबिद्ध है, जो एक दशक से अधिक समय में परमाणु नरिसुत्रीकरण के लिये पहला बहुपक्षीय समर्थन है।
- शिखर सम्मेलन में भारत का रुख: भारत प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिये संयुक्त राष्ट्र और सुरक्षा परिषद में सुधारों का आह्वान करता है, तथा अफ्रीकी देशों के साथ-साथ स्वयं को स्थायी सदस्यता में शामिल करने को बढ़ावा देता है।
- भारतीय प्रधानमंत्री ने साइबर, समुद्री और अंतरिक्ष को संघर्षों में नए मोर्चों के रूप में उद्धृत करते हुए सुरक्षा बनाए रखने के लिये अंतरराष्ट्रीय ढाँचे का आग्रह किया। उन्होंने वैश्विक डिजिटल शासन का समर्थन करते हुए अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिये भारत के डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे की पेशकश की।
- भारत ने भवषिय के लिये संयुक्त राष्ट्र के समझौते तथा एआई शासन और डिजिटल सहयोग पर पहल का समर्थन किया।

## संयुक्त राष्ट्र में अब सुधार की आवश्यकता क्यों?

- पुराना ढाँचा: संयुक्त राष्ट्र की स्थापना वर्ष 1945 में हुई थी, तबकेवल 51 देश ही इसके सदस्य थे, जबकि वर्तमान में इसके सदस्य देशों की संख्या 193 है।
- वैश्विक अर्थव्यवस्था में वर्ष 1945 की तुलना में बारह गुनी वृद्धि हुई है, तथा अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली औपनिवेशिक काल के दौरान तैयार की गई थी।
- वैश्विक असमानताएँ: विकासशील राष्ट्र बढ़ते ऋण और असमानताओं का सामना कर रहे हैं जो सतत विकास में बाधा डालते हैं, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान वैश्विक प्रणालियाँ वर्तमान विश्व की जरूरतों को पूरा नहीं कर पाती हैं।
- तकनीकी और भू-राजनीतिक बदलाव: आधुनिक तकनीकी प्रगति और बदलती वैश्विक शक्ति गतिशीलता वर्तमान वैश्विक चुनौतियों, जैसे जलवायु कार्रवाई, सतत विकास एवं आर्थिक असमानताओं से निपटने में **द्वितीय विश्व युद्ध** के बाद की संस्थाओं की अपर्याप्तता को उजागर करती है।
- वैधता और विश्वसनीयता से संबंधित मुद्दे: सुरक्षा परिषद की वैधता और विश्वसनीयता पर लगातार सवाल उठ रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को प्रभावी ढंग से बनाए रखने के लिये, परिषद को सभी सदस्य देशों की सामान्य इच्छा को प्रतिबिंबित करना चाहिये, न कि कुछ चुनदा स्थायी सदस्यों के नियंत्रण में रहना चाहिये।
- परिषद के नरिण्यों और कार्यों की वैधता बढ़ाने के लिये सुधार आवश्यक है, क्योंकि इसकी वर्तमान स्थायी सदस्यता आज की भू-राजनीतिक वास्तविकताओं का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं करती है।
- असमान प्रतिनिधित्व: एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे क्षेत्रों का वर्तमान सुरक्षा परिषद संरचना में अपर्याप्त प्रतिनिधित्व है।
- यह असंतुलन प्रतिनिधित्व की समानता के बारे में चर्चा पैदा करता है और परिषद की नरिण्य लेने की प्रक्रिया की प्रभावशीलता को कमजोर करता है।
- इन असमानताओं को दूर करने के लिये गैर-स्थायी सीटों का न्यायसंगत वितरण आवश्यक है।
- वित्तीय और प्रशासनिक सुधार: संयुक्त राष्ट्र की वित्तीय स्थिरता सर्वोपरि है, विशेष रूप से तब जब उसे शांति स्थापना और विकास पहलों की बढ़ती मांगों का सामना करना पड़ रहा है।
- जापान के सुधार प्रस्ताव में, **वित्तीय दायित्वों को सदस्य देशों की ज़िम्मेदारियों के साथ संरेखित करने तथा** नषिपक्ष एवं आनुपातिक योगदान सुनिश्चित करने पर बल दिया गया है।
- **वैश्विक सुरक्षा चुनौतियाँ:** वर्तमान अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा वातावरण जटिल चुनौतियों का सामना कर रहा है जिनमें **क्षेत्रीय संघर्ष, आतंकवाद और मानवीय संकट** शामिल हैं।
- इन मुद्दों को प्रभावी ढंग से हल करने के लिये एक प्रभावी सुरक्षा परिषद आवश्यक है। सुधारों से नकारक कूटनीति और शांति-निर्माण रणनीतियों को लागू करने की संयुक्त राष्ट्र की क्षमता बढ़ेगी।

## संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने क्या सुधार प्रस्तावित किये?

- **सुरक्षा परिषद में सुधार:** संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद अब वर्तमान भू-राजनीतिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित नहीं करती है और सुधार के बिना इसकी विश्वसनीयता कम होने का खतरा है।
  - गुटेरेस ने अफ्रीका, एशिया-प्रशांत और लैटिन अमेरिका जैसे क्षेत्रों के कम प्रतिनिधित्व की समस्या को दूर करने के लिये परिषद की संरचना और कार्य पद्धति में बदलाव का आह्वान किया है।
- **वैश्विक वित्तीय ढाँचे को मजबूत बनाना:** **अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक समूह** और **विश्व व्यापार संगठन** सहित अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली को सतत विकास लक्ष्य हासिल करने के लिये संघर्ष कर रहे ऋणग्रस्त विकासशील देशों को बेहतर ढंग से समर्थन देना चाहिये।
  - भवष्य के संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन में वित्तीय संस्थाओं को अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण बनाने तथा वैश्विक आर्थिक चुनौतियों का समाधान करने में सक्षम बनाने के लिये सुधारों की शुरुआत की गई।

## संयुक्त राष्ट्र सुधार वैश्विक शासन को किस प्रकार प्रभावित करेंगे?

- **उन्नत समावेशिता:** इन सुधारों का उद्देश्य **विकासशील देशों** और अफ्रीका, लैटिन अमेरिका जैसे कम प्रतिनिधित्व वाले क्षेत्रों को अधिक सशक्त बनाकर वैश्विक शासन को अधिक समावेशी बनाना है।
  - इससे नरिण्य लेने की प्रक्रिया अधिक न्यायसंगत हो सकेगी।
- **सक्रियता में वृद्धि:** इन सुधारों से अधिक सक्रिय **शांति स्थापना आयोग** की स्थापना होगी तथा शांति अभियानों में परिवर्तन होगा, जिससे उभरती वैश्विक चुनौतियों पर त्वरित प्रतिक्रिया संभव हो सकेगी।
- **सुदृढ़ वित्तीय संरचना:** अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली में सुधार से अधिक कर्ज का सामना कर रहे विकासशील देशों को सहायता मिलेगी तथा सतत विकास लक्ष्यों की दशा में उनकी प्रगति में सहायता मिलेगी।
- **डजिटल गवर्नेंस:** ग्लोबल डजिटल कॉम्पैक्ट (जो कि भवष्य के लिये समझौते का हिससा है) का उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डजिटल प्रौद्योगिकियों को वनियमित करना है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे सतत विकास और मानव अधिकारों में योगदान दे सकें।
  - इसमें **डजिटल डिविड और साइबर सुरक्षा** जैसे मुद्दों का समाधान शामिल है।
- **युवा सहभागिता:** नरिण्य लेने की प्रक्रिया में युवाओं को शामिल करने पर बल देने से यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि भावी पीढ़ियों के हितों पर वचार किया जाए।
- **संघर्ष समाधान:** सुधारों में बहुपक्षीय प्रणाली को मजबूत करने और भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा का प्रबंधन करने के लिये नए मानदंडों और जवाबदेही तंत्रों की आवश्यकता है। इससे संघर्षों को रोकने और उन्हें अधिक प्रभावी ढंग से हल करने में मदद मिल सकती है।

## भारत संयुक्त राष्ट्र की आलोचना किस प्रकार करता है?

- **संकट प्रबंधन में अपरभावति:** भारत ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र चार्टर **कोविड-19 महामारी**, रूस-यूक्रेन संघर्ष, आतंकवाद और **जलवायु परिवर्तन** जैसी महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करने में वफिल रहा है।
  - भारतीय राजदूत ने संयुक्त राष्ट्र को आज की भू-राजनीतिक वास्तविकताओं के प्रति अधिक प्रासंगिक और उत्तरदायी बनाने के लिये इसमें तत्काल सुधारों का आह्वान किया।
- **वीटो शक्ति संबंधी चर्चाएँ:** भारत ने **पी-5 देशों (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चीन)** के पास मौजूद वीटो शक्ति की आलोचना की तथा उस प्रणाली की नष्पिपक्षता पर सवाल उठाया जो कुछ चुनदा लोगों को असंगत शक्ति प्रदान करती है।
  - भारत सहित कई देशों ने सुरक्षा परिषद में अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका और एशिया जैसे क्षेत्रों के प्रतिनिधित्व की कमी पर चर्चा व्यक्त की है।
- **चार्टर समीक्षा:** भारत ने संयुक्त राष्ट्र चार्टर की व्यापक समीक्षा का आह्वान किया है, जिसमें **"सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ"** जैसी पूर्ववर्ती संस्थाओं के पुराने संदर्भों तथा जापान सहित कुछ देशों को **"शत्रु राष्ट्र"** के रूप में नामित करने पर प्रकाश डाला गया है जबकि अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में उनकी वर्तमान भूमिकाएँ यथावत हैं।
  - इसमें इन वफिलताओं को सुधारने तथा चार्टर को आधुनिक भू-राजनीतिक वास्तविकताओं के अनुरूप अद्यतन करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।
- **धीमी सुधार प्रक्रिया:** भारत की चर्चा **संयुक्त राष्ट्र सुधार पर अंतर-सरकारी वार्ता (IGN) प्रक्रिया** की धीमी गति से संबंधित है, जो **2008** में शुरू हुई थी, लेकिन अभी तक इसमें कोई खास प्रगति नहीं हुई है। भारत ने इस बात पर बल दिया है कि यह मुद्दा वैश्विक प्राथमिकता बना रहना चाहिये।

## संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UN Security Council-UNSC)

संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुसार, अंतराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाए रखने का उत्तरदायित्व UNSC में

### परिचय

- संयुक्त राष्ट्र के 6 प्रमुख अंगों में से एक; संयुक्त राष्ट्र चार्टर द्वारा 1945 में स्थापित

### मुख्यालय

- न्यूयॉर्क सिटी

### पहला सत्र

- 17 जनवरी, 1946 को चर्च हाउस, वेस्टमिंस्टर, लंदन में

### सदस्यता

- 15 सदस्य- 5 स्थायी सदस्य (P5), 10 गैर-स्थायी सदस्य दो साल के कार्यकाल के लिये चुने गए (प्रत्येक वर्ष 5 का चुनाव किया जाता है)
- P5- अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस और चीन

### UNSC की अद्यक्षता

- 15 सदस्यों के बीच प्रत्येक माह बारी-बारी से
- वर्ष 2022 के लिये भारत की अध्यक्षता-दिसंबर

### मतदान शक्तियाँ

- 1 सदस्य = 1 मत/वीटो
- P5 देशों को वीटो शक्ति प्राप्त है वीटो पावर है
- UN के ऐसे सदस्य जो UNSC के सदस्य नहीं हैं, मतदान के अधिकार के बिना इसके सत्र में भाग लेते हैं

### UNSC समितियाँ/प्रस्ताव

- आतंकवाद:
  - संकल्प 1373 (आतंकवाद रोधी समिति)
  - संकल्प 1267 (दाएश और अल कायदा समिति)
- अप्रसार समिति:
  - संकल्प 1540 (परमाणु, रासायनिक और जैविक हथियारों के विरुद्ध)

### भारत और UNSC

- गैर-स्थायी सदस्य के रूप में 7 बार सेवा; 2021-22 में 8वीं बार चुना गया; स्थायी सीट की मांग
- स्थायी सीट के लिये तर्क:
  - 43 शांति मिशन
  - मानवाधिकार घोषणा (UDHR) को तैयार करने में सक्रिय भागीदारी
  - भारत की जनसंख्या, क्षेत्रीय आकार, सकल घरेलू उत्पाद, आर्थिक क्षमता, सांस्कृतिक विविधता, राजनीतिक प्रणाली आदि।

**G4-** चार देशों (ब्राजील, जर्मनी, भारत और जापान) का समूह जो UNSC में स्थायी सीटों के लिये एक-दूसरे की दावेदारी का समर्थन कर रहे हैं

## United Nations Security Council

Composition through 2022



### "मतैक्य के लिये मिलकर काम करना" आंदोलन (Uniting for Consensus-UfC Movement)

- अनौपचारिक रूप से इसे कॉफी क्लब के रूप में जाना जाता है
- देश UNSC स्थायी सीटों के विस्तार का विरोध करते हैं
- समूह के प्रमुख देश-इटली, स्पेन, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, दक्षिण कोरिया, अर्जेंटीना और पाकिस्तान
- इटली और स्पेन जर्मनी की दावेदारी का; पाकिस्तान- भारत की दावेदारी का; अर्जेंटीना-ब्राजील की दावेदारी का और ऑस्ट्रेलिया-जापान की दावेदारी का विरोध कर रहे हैं

### UNSC के समक्ष बड़ी चुनौतियाँ

- संयुक्त राष्ट्र के सामान्य नियम UNSC विचार-विमर्शों पर लागू नहीं होते हैं; बैटकों का कोई रिकॉर्ड नहीं रखा गया है
- UNSC में पावरप्ले; P5 की अराजकतावादी वीटो शक्तियाँ
- P5 के बीच गहन ध्रुवीकरण; लगातार मतभेद प्रमुख निर्णयों को अवरुद्ध करता है
- विश्व के कई क्षेत्रों का अपर्याप्त प्रतिनिधित्व



## नष्पिपक्ष:

भवषिय पर 2024 के संयुक्त राष्ट्र शखिर सम्मेलन में व्यापक सुधारों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया गया है। संयुक्त राष्ट्र और उसके संस्थानों में सुधार के लिये भारत का सक्रिय रुख एक अधिक न्यायसंगत एवं समावेशी वैश्विक परदृश्य को बढ़ावा देने की उसकी परतबिधता को

दर्शाता है। इन सुधारों को लागू करना 21 वीं सदी के जटिल मुद्दों को संबोधित करने के लिये संयुक्त राष्ट्र की प्रासंगिकता और क्षमता सुनिश्चित करने के क्रम में महत्त्वपूर्ण होगा।

?????? ???? ?????:

प्रश्न: भवषिय पर संयुक्त राष्ट्र शखिर सम्मेलन द्वारा प्रस्तावति संयुक्त राष्ट्र में सुधारों की आवश्यकता का मूल्यांकन कीजयि। ये सुधार वकिसशील देशों के वैश्वकि शासन को कसि प्रकार बेहतर करेंगे?

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष प्रश्न

??????:

प्रश्न. “संयुक्त राष्ट्र प्रत्यय समति(यूनाईटेड नेशंस करेडेंशयिल्स कमटी)” के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयि: (2022)

1. यह संयुक्त राष्ट्र (UN) सुरक्षा परषिद द्वारा स्थापति समति है और इसके पर्यवेक्षण के अधीन काम करती है।
2. पारंपरिक रूप से प्रतविरष मार्च, जून और सतिंबर में इसकी बैठक होती है।
3. यह महासभा को अनुमोदन हेतु रपिरट प्रस्तुत करने से पूरव सभी UN सदस्यों के प्रत्ययों का आकलन करती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 3
- (b) केवल 1 और 3
- (c) केवल 2 और 3
- (d) केवल 1 और 2

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) के प्रत्येक नयिमति सत्र की शुरुआत में एक प्रत्यय समति नियुक्त की जाती है। इसमें नौ सदस्य होते हैं, जनिहें UNGA अध्यक्ष के प्रस्ताव पर महासभा द्वारा नियुक्त कयिा जाता है। अतः कथन 1 सही नहीं है।
- प्रतनिधियों की साख और प्रत्येक सदस्य राज्य के प्रतनिधिमंडल के सदस्यों के नाम महासचवि को प्रस्तुत कयिा जाते हैं और या तो राज्य या सरकार के प्रमुख या वदिश मामलों के मंत्री द्वारा जारी कयिा जाते हैं। समति के लयि सदस्य राज्यों के प्रतनिधियों की साख की जाँच करना और उस पर महासभा को रपिरट करना अनविर्य है। अतः कथन 3 सही है।
- आमतौर पर समति की बैठक नवंबर में होती है, दसिंबर में आम सभा के समक्ष रपिरट प्रस्तुत की जाती है। अतः कथन 2 सही नहीं है।

अतः वकिल्प (a) सही उत्तर है।

??????:

Q. संयुक्त राष्ट्र आर्थकि एवं सामाजकि परषिद (ECOSOC) के प्रमुख कार्य क्या हैं? इसके साथ संलग्न वभिनिन प्रकार्यात्मक आयोगों को स्पष्ट कीजयि। (2017)

Q. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परषिद में स्थायी सीट पाने की दशिा में भारत के समक्ष आने वाली बाधाओं पर चर्चा कीजयि। (2015)